International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

विद्यालय में समावेषी शिक्षा व्यवस्था

दीपिका पारीक[1] ए राजेषकुमार[2]

[1]कोर्सकॉडिनेटरए अजय लीला विषिश्ट शिक्षक प्रशिक्षणमहा विद्यालय रामराज नगर चौखा जोधपुर राजस्थान
[2]सहायक आचार्यए अजय लीला विषिश्ट शिक्षक प्रशिक्षण महा विद्यालय रामराज नगर चौखा जोधपुर राजस्थान

सारांष

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैंए इस प्रक्रिया की सफलता उत्तम विद्यालय पर निर्भर करतीहै। आदिम काल में विद्यालय जैसी कोई धारणा नहीं थीए क्योंकि बालक माता.पिता के साथ ही उनके व्यवहार को देखकर सीखता था। वह प्रत्यक्ष को देखता तथा ज्ञान प्राप्तकरता था। ज्यों ज्यों मानव ने उन्नति की त्यों त्यों उसको जीवन में समस्याओ का सामना भी करना पड़ा। वह यह नहीं चाहताथा कि नवीन पीढ़ी इन समस्याओं का सामना करे। इसलिए उसने नवीन पीढ़ी को विद्यालय रूपी प्रांगण में प्रवेष करान पर बल दिया जहाँ उसे एक निष्चित विधिएनिष्चित पाठ्यक्रम एनिष्चित षिक्षकएसमयए स्थान आदि की सहायता से मानव पीढी को सीखाना आरम्भ किया। इसमें कोई षंका नहीं कि स्कूल ;विद्यालयद्ध कॉलेज व विष्वविद्यालय सभ्यता व संस्कृति के संरक्षक के रूप् में अस्तित्व में आई ।

देष की कुल आबादी का लगभग 10ः व्यक्ति विकलांगता से ग्रसित है। इसमे अस्थाई रुप से विकलांग और बुर्जुग भी षामिल है सन 2020 ईण् में विकलांगता से ग्रस्त लोेगों की कुल जनसंख्या करीब 17 करोड़ होने का अनुमान है जिनमे करीब 1 करोड़ 70 लाख बुर्जुग होन का अनुमान है। जिनमे से अधिकांष बहु विकलांगता से ग्रस्ति है।

परिचय

अधिकाष ऐसा देखा जाता है कि सभी बच्चों की षैक्षिक जरूरतों का ेपूरा करने के लिए विद्यालय का महत्व बढता जा रहा हैं इसलिए आज के विद्यालयों मे समावेषीत विद्यालयों का भी प्रार्दुभाव हुआए जो समावेषन का कार्य करती है । यहाँ पर एक ऐसा वातावरण तैयार किया जाता है जिसमे सामान्य और विकलांगता ग्रस्त बालक दोनो ही एक छत्त के नीचे एक ही पाठ्यक्रम से षिक्षण कार्य पूर्ण करे। इस कारण विषेश आवष्यकता वाले बालको को शिक्षा प्रणाली से जोड़ा गया और ऐसे समावेषित विद्यालययो की व्यवस्था की गई जिसमे उन्हे शिक्षा दी जाए। विषेश शिक्षा के क्षेत्र में एकीकृत शिक्षा प्रणाली में कुछ सुधार स्वरूप ही समाज मे समावेषी शिक्षा का प्रार्दुभाव हुआ । यह विद्यालय रूपी प्रांगण में एक बालक जो किसी समस्या से ग्रसित हैए किन्तु समाज उसे नकारात्मक अभिवृत्ति से देखता हैए तब समावेषी विद्यालयों की आवष्यकता महसूस हुई और उसने विद्यालय व्यवस्था के माध्यम से बालक में कोई कमी नहीं हैं अपीतु समाज उनकी विषेश आवष्यकताओं को नहीं समझ पा रहा है।

शिक्षा क्या है

शिक्षा का मतलब ज्ञान सदाचार उचित आचरण और तकनीकी दक्षता आदि को प्राप्त करने कि एक विधि है। शिक्षा ही वह महत्वपूर्ण प्रकिया है जो मनुश्य को एक सभ्य और सुसंस्कृत मानव बनाती है। वेसे तो

जन्म से ही बालक कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है तत्पष्चात समाज मे व्यवहार करने का तरिका सिखता हैए व्यवहार को समाज कुछ नियमो एकानूनो एवं प्रावधानो मे उसे ढालने का प्रयास किया जाता है। समाज कि एक शिक्षा रुपि नाम जिसे विद्यालय कि उपमा दी जाती है।

विद्यालय क्या है

शिक्षा का मतलब ज्ञान सदाचार उचित आचरण और तकनीकी दक्षता आदि को प्राप्त करने कि एक विधि है। शिक्षा ही वह महत्वपूर्ण प्रकिया है जो मनुश्य को एक सभ्य और सुसंस्कृत मानव बनाती है। वेसे तो जन्म से ही बालक कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है तत्पष्चात समाज मे व्यवहार करने का तरिका सिखता हैए व्यवहार को समाज कुछ नियमो एकानूनो एवं प्रावधानो मे उसे ढालने का प्रयास किया जाता है। समाज कि एक शिक्षा रुपि नाम जिसे विद्यालय कि उपमा दी जाती है।

समावेशी शिक्षा क्या है

समावेषी शिक्षा प्रणाली जो विषेश षैक्षणिक आवष्यकताओ कि पूर्ति के लिए सामान्य छात्र और दिव्यांग छात्र को एक हि छत के नीचेए एक ही पाठ्यक्रम और एक ही षिक्षक के द्वारा जो शिक्षा प्राप्ति के साधन और प्रणालि दि जाती उसे समावेषी शिक्षा कहा जाता है। प्राचीन शिक्षा पद्धति कि जगह आज आधुनिक युग मे नई शिक्षा नीति के प्रयोग मे समावेषी शिक्षा विषेश विद्यालयो मेंए कक्षाओ मे स्वीकार किया जाना मान्य कर दिया गया है। समावेषी शिक्षा मे दिव्यांग बालको और सामान्य बालको को एक साथ षिक्षित करने का लक्ष्य रखा गया है।

विद्यालय मे समावेषी शिक्षा व्यवस्था

बालको कि शिक्षा चाहे वह किसी भी स्तर कि होए उसमे विद्यालय के वातावरण का बहुत योगदान होता है। विद्यालय के वातावरण मे हि बालक कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है एवं कुछ चीजे शिक्षा बालक को स्वयं हि देखकर आने लगती है। समावेषीत शिक्षा के लिए यह आवष्यक है कि विद्यालय का वातावरण सुखद और स्वीकार्य होना चाहिए।

समावेषी शिक्षा कि मूल भावना है कि एक ऐसा विद्यालय जहॉ सभी बालक एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैए परन्तु सामान्य विद्यालयो मे षेक्षिक आवष्यकताओ को पूरा करने या फिर उन्है प्रवेष देने से मना कर दिया जाता है। वहि समावेषीत विद्यालयो मे नई नीति जो श् शिक्षा के अधिकार 2009श् ;राश्ट्रीय शिक्षा नीति . 2023द्ध में श्शिक्षा सभी के लिए होश् ऐसा प्रावधान रखा गया है। अब कोई भी विद्यालय दिव्यांग बालको को प्रवेष देने से इंकार नहि कर सकता ।

जहाँ हम परम्परागत विद्यालयों की बात करते हैए तो उसमे दृढ विशय होते है । जब कि समावेषित विद्यालयों मे षिक्षण स्तर लचीलाएछात्र केन्द्रित तथा सीखने पर बल देने वाली होती है। एक समावेषी विद्यालय सभी प्रका के बालको को षिक्षण प्रणाली के दौरान प्रवेष देता है।

विकलांग बालक अपने आपको दूसरे बालकों की तुलना में कमाजोर तथा हीन समझते हैंए जिसके कारण उनके साथ पृथकता से व्यवहार किया जाता है। समावेषी शिक्षा व्यवस्था में विकलांगों को सामान्य बालको के

साथ मानसिक रूप प्रगति करने के अवसर प्रदान किये जाते है। जिसमेे प्रत्येक बालक यह सोचता है कि वह किसी भी प्रकार से अन्य बालको से कमजोर नहीं है। इसी क्षत्र मे समावेषी शिक्षा अस्तित्व मे आई।
आओं हम चर्चा करे ं कि यह समावेषी शिक्षा है क्या ६ तो हम उत्तर प्राप्त करते है कि सामान्य बालकों तथा विषेश आवष्यकता वाले बालकों के मध्य एक ऐसा तालमेल कायम करनाए जिससे दोनो प्रकार के बालकों को एक साथ पढ़ाया जा सके । इस प्रकार की शिक्षा का केवल और केवल एक ही उद्देष्य है कि निःषक्त बालको को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना ।

समावेषी शिक्षा के सफल क्रियान्वन के लिए विद्यालय प्रबन्धन ६ व्यवस्था समावेषन की अवधारण के अनुसार होना चाहिए। विद्यालय व्यवस्थापन एक ऐसा संगठन है। जहाँ षैक्षणिकएसामाजिक संसाधनात्मकए मानव संसाधनात्मक व्यवस्थाऐं सम्मिलित होतीह ै। समावेषी विद्यालय मे निःषक्त बालकों हेतु आवष्यक सामग्री .→ सहायक षिक्षण सामग्रीए दृष्य .श्रव्य उपकरणए ग्लोबए मानचित्रए वैषाखी एचष्मेंए ब्रेल एपुस्तके ए खेल सामग्रीएसंगीतए वाद्य यंत्र आदि विद्यालय प्रांगण में मौजुद होने चाहिए। व्यवस्था के रूप में मौजुद रहने चाहिए विद्यालय का वातावरण भी भेदभाव रहित रहना चाहिए। छात्रों में ऐसे संस्कार निर्मित करने चाहिए कि वे अपने साथी जो निःषक्त है उनकी समय.समय पर सहायता करे। विद्यालय का वातावरण निःषक्त बालकों के हिसाब से बाधा रहित होना चाहिए।
समावेषी विद्यालयों मे पाठयक्रम की विशय वस्तु के साथ साथ अन्य विशयों की विशय वस्तु को औचित्य का ध्यान रखते हुए ऐसा पाठ्यक्रम लागू करेजिनसे विषेश आवष्यकता वाले बालको के लिए उपयुक्त हो। षिक्षण क दौरान बालकेन्द्रित षिक्षण विधि को अपनाते हुए सहायक षिक्षण सामग्री एवं तकनीकी का सहारा षिक्षण मे लेना चाहिए। समावेषी शिक्षा में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मनुश्य द्वारा किसी व्यक्ति को षिक्षित करना सबसे बड़ी सेवा हैं। इसलिए एक अध्यापक एक अच्छे समाज व राश्ट्र का तिर्माता होता है।
समावेषी शिक्षा मे ंअध्यापक की भूमिका निम्न रूप से है।

- अध्यापक छात्रो को समझने मे योग्य एवं सक्षम हो ।
- अध्यापक छात्रों की योग्यता में अधिक योगदान देकर उसे प्रोत्साहित करे।
- अध्यापक को पाठ्यक्रम योजनाबद्ध तैयार करना जिससे विकलांग छात्र भी प्रभावषाली ढंग से समझ पाए।
- अध्यापक को कक्षा में ज्यादा से ज्यादा क्रियाएॅ करके छात्रों को प्रोत्साहित करना।
- अध्यापक छात्रो को प्रत्येक कार्य में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करेेंं।
- अध्यापक विकंलाग बच्चो की क्षमताओ को जानते हुए अभिभावकों से सम्पर्क करे।
- अध्यापकर ऐसे अन्य षिक्षण संस्थाओं व व्यवसायिक कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क करना चाहिए। जो ऐसे छात्रों को सहयोग देने के इच्छुक हो। ताकि छात्रों को कल्याण के ज्यादा से ज्यादा अवसर प्रदान किए जाये।

निश्कर्श

ष्हर षिषु को शिक्षा का बुनियादी अधिकार है और उसे अधिगम का एक स्वीकार्य स्तर प्राप्त करने और बनाए रखने का अवसर दिया जाना चाहिए।ष्

डाकर सेनेगाल ;2000द्ध में आयोजित विष्व शिक्षा मंच पर शिक्षा में समावेषन की बात दोहराई । वर्तमान समय में विष्व के समस्त देष अपनी भावी पीढ़ी के सर्वांगीण किास के लिए अनेकानेक प्रयत्न कर रहे है।अतः वर्तमान समय में उनके लिए समावेषी शिक्षाकी बात विष्व समुदाय कर रहा हैए जो विकंलाग एवं सामान्य दोनो ही बालको की शिक्षा के लिए अत्यधिक उपयोगी है । शिक्षा स ेदूर उन समस्त बच्चों को उचित शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करते हुए एक नई दिषा दी जाए। आज भी विषेश आवष्यकता वाले बालकों की षैक्षिक उपलब्धि संबन्धी स्थिति चितांजनक है। समाज के हितधारको के लिए आवष्यक है कि समाज के इस वर्ग ;विकंलागद्ध के अस्तित्व की महत्ता को उचित स्थान दे।

सन्र्दभ ग्रन्थ

1ण् षैक्षिक प्रषासन एवं प्रबन्धरू सुरेन्द्र कुमार साहु नेहा पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूर्टस नई दिल्ली 110002।
2ण् विकलांगों हेतु समावेषी शिक्षारू डॉण् उमेष कुमार पटेल ष्श्रीषष।
3ण् दृश्टिबाधित विद्यार्थियों की समस्याऐं एवं सुझावरू डॉण् सुदीप कुमार दुबे।
4ण् वर्तमान समय में समावेषी शिक्षा की आवष्यकता एवं प्रमुख चुनौतियाँरू विरेन्द्र कुमार ।
5ण् सामावेषन शिक्षा में अध्यापकों के उत्तदायित्वों एवं भूमिका पर एक समीक्षा . कुसुुम देवी . अस्टिटेन्ट प्रोण् आदर्ष कृश्ण पीण्जीण्कॉलेजएषिकोहाबाद।
6ण् थ्नदकंउमदजंसे व िप्दबसनेपअम म्कनबंजपवदद रूण्ज्ञण् टपता श्रंेूंदज ए।सां ।तवतं
7ण् समावेषी शिक्षा . ैपदही
8ण् विषिश्ट शिक्षा . जानकी प्रकाषन . संजीव केण् ;2008द्ध
9ण् एजुकेषन फॉर ऑल टूवर्ड्स क्वालिटी विध इक्विटी ;2016द्ध
10ण् डभ्त्क् नेषनल यूनिर्वसिटी ऑफ एजुकेषन प्लानिंग एण्ड एडमिमिस्ट्रेषन
11ण् ;ीजजचरूध्ूूूण्दनमचंण्वतहण्द्ध